दान या कल्याण

एक गाँव में यज्ञ हुआ। चंदा इकट्ठा किया गया। यज्ञ के बाद पैसा का हिसाब हुआ। तीस हजार रुपये बचे। विचार होने लगा कि इन पैसों को किस काम में लगाया जाय! अचानक खबर मिली कि इस गाँव का एक तेज बुद्धि वाला व्यक्ति गम्भीर रूप से बीमार पड़ा है। वह हमेशा गाँव वालों की चिन्ता में ही जीवन बिताता रहा है, परोपकारी है और आज्ञाकारी है। आज तक किसी गाँव वाले की बात नहीं उठाया है। उसकी बीमारी की बात सुनकर गाँव वाले उदास हो गये। पुनः खबर मिली कि उसे भागलपुर से पटना रेफर कर दिया गया है। वह गरीब है, पैसे का अभाव है, वह पटना कैसे जायेगा!

उसमें से एक युवक ने कहा कि अगर यज्ञ के बचे हुए पैसे को उसे उपलब्ध करा दिया जाय तो वह पटना जा सकता है। दूसरे ने कहा – ''अगर वह ठीक भी हो जाता है तो वह पैसे लौटायेगा कैसे?''

विचार हुआ कि आज शाम सात बजे ग्रामीणों की एक सभा बुलाई जाय। शाम सात बजे बैठक हुई। एक बुजुर्ग ने कहा – भाई! यह सही है कि बीमार युवक सब प्रकार से सुयोग्य है, लेकिन पैसा यज्ञ का है, धार्मिक कार्य के लिए चंदा इकट्ठा किया गया है, उस पैसे को इसमें लगाना उचित नहीं होगा।

ग्रामीणों के बीच एक शिक्षक ने कहा – इनकी बातें भी सही हैं, यज्ञ का पैसा दान का है और इसे दान में जाना चाहिए, लेकिन अगर इस पैसे को हमलोग बीमारी में लगा दें तो युवक का कल्याण हो जायेगा और जीवित रहेगा तो पैसे लौटा देगा उस पैसे से हमलोग पुनः धार्मिक कार्य करेंगे, वह ग्रामीणों की सेवा करेगा, परिवार का भरण–पोषण करेगा, इसलिए इस पैसे को उसकी बीमारी में लगा दिया जाय। क्योंकि ''दान से भी बड़ा कल्याण होता है'' सब ने ताली बजाई।

नाम	–	**मिनाक्षी कुमारी**
माताजी का नाम	–	**श्रीमती रीता देवी**
पिताजी का नाम	–	**श्री परमानन्द पोद्दार**
ग्राम	–	**बौरमा**
पोस्ट	–	**बाजितपुर**
थाना	–	**मेहरमा**
जिला	–	**गोड्डा (झारखण्ड)**
पिन कोड	–	**814160**
मोबाईल नं0	–	**9771616214**